द्वितीय अध्याय

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन

2.1. ***कथावस्तु का स्वरूप*** -

2 1 1 कथावस्तु के गुण - मौलिकता, संभाव्यता, प्रबंध, कौशल्य, सुगठन, रोचकता।

2 2 ***कथावस्तु - दीक्षांत, अग्निपंखी।***
निष्कर्ष

'दीक्षांत' और 'अग्निपंखी' उपन्यासों की कथावस्तु का विवेचन

2 1 कथावस्तु का स्वरूप -

कथावस्तु उपन्यास का प्राण होता है। इसीलिए उसे उपन्यास का सर्वप्रथम एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। उपन्यास जीवन की प्रतिकृति होने के कारण इसकी कथावस्तु क्रिया-कलापों और घटनाओं से संबंधित होती है। उपन्यास में कथावस्तु का ऐसा गठन होना चाहिए जिसमें घटनाएँ सुसंबद्ध और व्यवस्थित तथा श्रृंखलाबद्ध हो, जिससे उसमें प्रवाह तथा गतिशीलता बनी रहे। इसके विपरीत उसमें जितनी अव्यवस्थाएँ होगी, वह उतना ही असफल और प्रवावहीन होगा। प्रतापनारायण टंडन ने कहा है - ''कथानक उपन्यास का वह मूल ढॉचा होता है जिस पर उपन्यास रूपी विशाल भवन का निर्माण किया जाता है।''[1] अत प्रत्येक उपन्यासकार को अपनी कथाव्सतु के चयन में और उसकी संस्थापना में अत्यंत जागरूक तथा सजग रहने की आवश्यकता है।

उपन्यासकार कथावस्तु का चयन इतिहास, पुराण, जीवनी, परंपरा तथा यथार्थ जीवन से करता है और उसमें कल्पना का मिश्रण करके उसे पूर्णता प्रदान करता है, किंतु उसके संगठन की और उसमें प्रभावोत्पादकता लाने की पूरी जिम्मेदारी उसकी ही होती है। उपन्यासकार को ऐसी ही कथावस्तु का चयन अथवा सृजन करना चाहिए जो जीवन की स्वाभाविकता तथा समग्रता से परिपूर्ण हो। इसी बात पर बिल्यिम हडसन ने भी बल दिया है।

उपन्यास में व्याप्त कुतूहल का तत्त्व ही विकास पाता है। कथावस्तु के समुचित विकास के लिए उसे घटनाओं के पूर्वापार संबंध, कुतूहल और औचित्य को ध्यान में रखेकर स्थिर करना चाहिए। कथावस्तु के समस्त अंगों का सुंदर संगठन, घटनाओं का समुचित विन्यास उपन्यास को सुंदर बनाने के लिए आवश्यक होता है। व्यर्थ का त्याग कर; रमणीय वर्णन, चरित्र उद्घाटन एवं मनोविश्लेषण करनेवाले वार्तालाप के द्वारा कथानक का विकास होना चाहिए।

उपन्यास के कथानक को तीन भागों में बॉटा जा सकता है - (1) प्रारंभ या प्रस्तावना (2) मध्य या विकास तथा (3) समाप्ति या परिणाम।

उपन्यास की महत्ता उसकी कथावस्तु के ठोस सत्य पर आधृत होती है। गंभीर प्रभाव के अभाव में कथावस्तु प्रभावोत्पादक नहीं हो सकती। अत· देखना यह है कि किसी उपन्यास की कथावस्तु में वे गुण कौन से होते हैं, जिनसे उसमें संगठन आता है और उपन्यास सफल एवं प्रभावशाली बनता है।

I कथावस्तु के गुण -

कथावस्तु में निम्न गुणों का होना अनिवार्य माना जाता है -

1. मौलिकता -

मौलिकता कथावस्तु का अनिवार्य गुण है। उपन्यासकार को चाहिए कि वह अपनी प्रतिभा के बल पर पाठकों को चिरपरिचित घटनाओं को उनके समक्ष नवीन रूप में मौलिकता के साथ प्रस्तुत करें।

2. संभाव्यता -

पाठक उपन्यास में अपने ही जीवन-जगत् का प्रतिबिंब देखना चाहता है और इसलिए वह उसे पढता है। जन-जीवन में जो घटनाएँ घटित न हो सके उनका वर्णन इस लगाव के लिए घातक होता है, इसीलिए उपन्यासकार को सदैव घटनाओं की संभाव्यता का ध्यान रखना पडता है। संभाव्यता और औचित्य का ध्यान हमें घटनाओं के साथ-साथ वार्तालाप, वेशभूषा, वर्णन में भी रखना पडता है।

3. प्रबंध-कौशल्य -

कथावस्तु की मुख्य और गौण कथाओं को औचित्य और प्रभाव के साथ संगठित करने की चतुराई प्रबंध कौशल्य है। इसकी उपन्यास में अनिवार्य आवश्यकता होती है।

4. सुगठन -

प्रबंध कौशल्य के साथ-साथ समस्त उपन्यास की एक सुगठित रचना होनी चाहिए, उसमें आवश्यक का ग्रहण कर अनावश्यक का त्याग करना चाहिए।

5 रोचकता -

''कारण-कार्य की श्रृंखला को ध्यान में रखते हुए कुतूहल को तीव्र बनाते चलना उपन्यास में रोचकता का प्राण है।''[2] रोचकता ही पाठाकों को उपन्यास की ओर आकर्षित करती है। रोचकता लाने के लिए उपन्यासकार को आकस्मिक और अप्रत्याशित का सहारा लेकर कौतूहल और नवीनता की सृष्टि करनी चाहिए -

उपन्यास की कथावस्तु में चरित्रों का विकास भी होता है और घटनाओं का वर्णन भी। इसमें कभी चरित्रों को प्रधानता दी जाती है और कभी घटनाओं को। इसके आधार पर कथावस्तु के दो भेद होते हैं -

1. चरित्र प्रधान कथावस्तु।

2 घटना प्रधान कथावस्तु।

उपन्यास जीवन का सर्वांगिण चित्रण प्रस्तुत करता है जो जीवन के अनेक रूप तथा विषम घटनाओं की पूंजी है। इसीलिए उपन्यास में भी अनेक प्रमुख और गौण घटनाएँ वर्णित होनी चाहिए जो चरित्रों के विकास में सहायक होती हैं। कुछ विद्वानों ने घटनाओं के आधार पर कथावस्तु के दो भेद किए हैं -

1 शिथिल अथवा असंबद्ध कथावस्तु।

2 संगठित अथवा संबद्ध कथावस्तु।

उपन्यास की महत्ता उसकी प्रभावोत्पादकता में निहित होती है। असंबद्ध घटनाओं से युक्त उपन्यास अरूचिकर हो जाता है। अत. पाठकों की रूचि को निर्बाध बनाये रखने के लिए कथावस्तु की सबद्धता ही अपेक्षित होती है।

कुछ विद्वान घटनाओं की पारस्पारिक संबद्धता के आधार पर कथावस्तु के दो भेद मानते हैं -

1 सरल कथावस्तु।

2 मिश्र कथावस्तु।

सरल कथावस्तु में घटनाओं का वैविध्य नहीं होता किंतु मिश्र कथावस्तु वैविध्यपूर्ण होती है।

कथावस्तु के दो प्रकार माने गए हैं -

1. मुख्य कथा या अधिकारिक कथा।

2 प्रासंगिक कथा।

2 2. कथावस्तु -

'दीक्षांत' -

सूर्यबाला का 'दीक्षांत' उपन्यास शहरी जीवन पर आधारित है। 'दीक्षांत' का विषय शिक्षा क्षेत्र है। प्रो शर्मा के पारिवारिक एवं शैक्षिक जीवन की अनेक समस्याओं को इसमें अंकित किया है। इस उपन्यास की प्रमुख कथा मि शर्मा से संबंधित है। अध्यापक जीवन की समस्याओं का सूक्ष्म चित्रण इस उपन्यास में पाया जाता है।

सूर्यबाला का उपन्यास 'दीक्षांत' एक अध्यापक विद्याभूषण शर्मा सर को केंद्र में रखकर सामान्य आदमी की जीवन-विरोधी और कठिन समय की कहानी है। जिसमें स्थितियों के रेगिस्तान में आदमी के अंदर की हरियाली क्रम्मश छीजती और सूखती जाती है। फ्लैशबैक पद्धति से शर्मा का जीवन सामने आता है।

प्रो शर्मा 'राधिकादेवी बिसारिया कॉलेज' में अध्यापक है। उन्होंने पीएच्. डी. की है। फिर भी उन्हें ज्युनियर लेक्चर्स लेने पडते हैं। कॉलेज में छात्र शोर-शराबा, हुड्दंगबाजी करते हैं। शर्मा सर छात्रों की शिकायत प्रिंसिपल से करे या न करे इसी अंतरद्वंद्व में फँस जाते हैं। अंतत: शर्मा छात्रों की शिकायत नहीं करते हैं। छात्रों की गलतियों को सुधारने का प्रयत्न करते हैं। उस समय उन्हें अपने बचपन की याद आती है। उनका बचपन का नाम विद्याभूषण था। वे मेधावी छात्र थे। उनके पिताजी भी अध्यापक थे। विद्याभूषण विनयशील और आज्ञाकारी था। अध्यापकों द्वारा पूछे गए सवालों के जबाब बहुत ही सही तथा सलीखे से देता था। अपनी बुद्धिमत्ता की कसौटी पर शर्मा बचपन में स्कूल के सभी अध्यापकों की प्रशंसा का पात्र बना हुआ था। डिप्टी साहब भी उनकी प्रशंसा करते हैं। भूषण के पिता सच्चे मार्गदर्शक थे। इसीलिए शर्मा भी अपने बचपन में होशियार तथा सदाचारी लडके थे। बचपन की यादों में आज के कॉलेज की अनुशासनहीनता के विचार शर्मा सर करते हैं।

प्रो. शर्मा अस्थाई नौकरी के कारण शाम के समय ठक्कर के घर उनके दो बच्चों की ट्यूशन लेते हैं। तब उन्हें घंटो तक बच्चों का इंतजार करना पडता है। बच्चों को पढाने के बाद मि शर्मा को ठक्कर की पत्नी का कुछ न कुछ काम करना पडता है। जब वे काम करने से इन्कार करते तब उन्हें 'बच्चा खेल रहा है' या 'दूध पी रहा है' जैसे बहाने बनाकर बिठाया जाता है। शर्मा सर तो ट्यूशन पर मिली चाय पर ही संतुष्ट हैं। घर पर

वे चाय नहीं लेते। इस चाय की बचत द्वारा वे घर की कुछ चीजें खरीदना चाहते हैं। मि. शर्मा को अपने बच्चों के लिए किताबें, जूते खरीदना भी मुश्किल है। किसी विशेष प्रसंग पर बच्चों को अपने दोस्तों से कपडे-जूते मॉगकर पहनने पडते हैं। मि शर्मा के घर कभी-कभी सिर्फ दाल या सब्जी ही खाने में रहती है। फिर भी शर्मा अपने बेटों से बहुत प्यार करते हैं।

प्रो शर्मा क्वालिफाईड अध्यापक है। गुप्ताजी एम्. ए. थर्डक्लास है। शर्माजी का क्वालिफिकेशन गुप्ता जी को बोझ बनता है। अन्य कोई कारण न होते हुए भी नाहक ही वे शर्मा जी का द्वेष करते हैं। उस समय डिसूजा शर्मा सर को बताता है कि मिसेज गुलाटी अपने पति के साथ विदेश जानेवाली है और उसके लेकर्च्स प्राप्त करने के लिए प्रिंसिपल से बात करो। परंतु अनंत समस्याओं का सामना करते-करते शर्मा सर अपना आत्मविश्वास खो देते हैं। अत उनके खोए आत्मविश्वास को वापस लाने का काम डिसूजा करता है। तब शर्मा डिग्री लेक्चर्स मिलने की आशा में अरसे बाद चार समोसें और मख्खन के छ. बिस्कुटों से घर वापस आते हैं। इसी खुशी में अपनी पत्नी कुंती से भी डिसूजा ने बताई बात कहते हैं। तब कुंती भी उन्हें धीरज देती है। प्रिंसिपल से मिसेज गुलाटी के लेक्चर्स के बारे में चर्चा करने की नौबत आती है तो प्रिंसिपल क्या कहेंगे ? आपको पता कैसे चला ? आदि अन्य सवालों के फेरे में आकर शर्मा सर निरर्थक परिणाम से डरते हैं। सुबह से ही प्रिंसिपल के सामने क्या, कैसे कहना है इस पर सोचते रहते हैं। शर्मा सर अपने आप पर झुँझलाते समय पसीना तक आ जाता है, जैसे - "पसीना चुचुहा आया . . यही तो ऊँची कुर्सी पर बैठे आदमी को बोलने की पूरी छूट रहती है। किसी को भी कुछ भी कह देना उसका अधिकार है और सुनकर हिहियाते रह जाना दूसरे पक्ष की लाचारी।"[3] इसी विचार में प्रिंसिपल से जाकर पूछते हैं। प्रिंसिपल इस संदर्भ में ऐसी सूचना अभी तक नहीं मिली है ऐसा कहकर उन्हें बाहर भेजते हैं। शर्मा बाहर आकर रिसेस के समय सभी अध्यापकों के साथ हताश होकर खाना खाने लगे तब रिसेस खत्म होती है। शर्मा सर थोडी देर करके क्लास रूम में पहुँच जाते हैं क्योंकि विद्यार्थी एक-दूसरे की मटरगस्ती करते हुए देर से क्लास में आते हैं। ऊपर से दूसरे किसी अध्यापक का नाम बताकर देरी हुई ऐसा कहते हैं। शर्मा सर छात्रों से परेशान होने पर भी पढाना शुरू करते तब छात्र बताते है कि गुप्ता सर ने यह पाठ पढाया है। एक तरफ छात्र और दूसरी तरफ मि गुप्ता शर्मा सर को परेशान करते हैं। इसी

कारण शर्मा सर असहाय और अपमानित होकर घर लौटते हैं। उनकी पत्नी कुंती पति की परेशानी देखकर चिंतित होती है।

एक दिन कॉलेज गेट के पास रतन बरूआ नाम का लडका खडा था। शर्मा सर गेट के पास आते ही वह उनसे पूछता है कि मैं परीक्षा में पास तो हो जाऊंगा न ? शर्मा सर उसे बताते कि जैसे तुमने उत्तर लिखे हैं उस पर निर्भर है। तब बरूआ शर्मा सर को परीक्षा में पास करने के लिए कहता है। परंतु शर्मा उसे जोंश के साथ बुरा कहते हैं। बरूआ शर्मा सर को परीक्षा में पास करने की धमकी देकर चला जाता है। लेकिन बरूआ परीक्षा में फेल हो जाता है। गुप्ता बरूआ को री-इग्जमिनेशन करवा देने का आश्वासन देते हैं। परंतु शर्मा इसका विरोध करते हैं। क्लास में सब छात्र क्लास छोड़कर जाते हैं। यह बात स्टाफ रूम में फैल जाती है। मि. गुप्ता शर्मा सर की सहानुभूति जताते हुए छात्रों को डाँटते हैं।

शर्मा सर को बदनाम करने हेतु यह बात फैलाई जाती है कि उनके साथ किसी बदमाश ग्रुप ने मारपीट की है। शर्मा सर घर जाते तब कुंती भी घबरा जाती है और पति से पूछती है। शर्मा सर घर में पत्नी को जैसे-तैसे समझाते हैं परंतु कॉलेज में पहुँचते ही हर अध्यापक की शंकीत दृष्टि उनकी तरफ उठती है। वे इन नजरों से परेशान होते हैं। उस समय यादव आकर शर्मा से बताता है कि उन्हें किसी बदमाश लडकों ने पिटा है ऐसी बात सभी जगह फैल गई है। शर्मा सर सुनकर और भी परेशान होते हैं। शर्मा यादव द्वारा बताई बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि यह सरासर गलत है। सिर्फ मुझे बदनाम करने के लिए किया जा रहा है। आज कल अडियल आदर्शवादियों का गुजारा मुश्किल से ही होता है इस दुनिया में। आखिर प्रिंसिपल शर्मा सर को बुलाकर कहते हैं कि आपकी दुश्मनी कुछ बदमाशों के ग्रुप से चल रही है। कॉलेज की प्रतिष्ठा का सवाल है। इसलिए आप सेकंड टर्म से कहीं दूसरी जगह नौकरी कीजिए। शर्मा सर यह सुनकर दयनीयता से प्रिंसिपल से नौकरी से न निकालने के लिए कहते हैं। परंतु प्रिसिंपल राजदान मैनेजमेंट कमिटी के हाथों की कटपुतली होने के कारण कुछ नहीं कर सकते। शर्मा सर को सिनियर लेक्चर्स मिलने के बजाय मैनेजमेंट नौकरी से ही निकालती है।

प्रिंसिपल शर्मा सर के इस्तीफे की माँग करते हैं और परेशान होकर घर लौटते तब उनकी पत्नी तोषी राजदान इसका कारण पूछती है। प्रिंसिपल राजदान उसे बताते कि हिंदी डिपार्टमेंट में क्वालिफाईड शर्मा को अगली टर्म से निकाला जा रहा है। तोषी उस समय प्रिंसिपल के अधिकार और दायित्व के बारे में कहती है। परंतु

राजदान असहाय होकर मैनेजिंग कमिटी के आदेश का पालन करते हैं। मैनेजिंग कमिटी को बरूआ जैसे परिवार से डोनेशन मिलता है और एम् एल् ए के भानजे को शर्मा की जगह देनी है इसीलिए प्रिंसिपल भी मैनेजिंग कमिटी के हाथों की कटपुतली बनकर शर्मा का इस्तीफा लेते हैं। प्रिंसिपल राजदान ने मैनेजिंग कमिटी के आदेश का विरोध भी नहीं किया। विरोध करते तो अपनी नौकरी खो बैठते। लाचार होकर राजदान शिक्षा में गलत नीति का अवलंब करने में सहयोग देते हैं।

प्रो शर्मा कॉलेज से लौटते समय सीधे घर वापस आने के बजाय बेगम बुर्जी की ओर चले जाते है। अपना परिवार अब कैसे चलाए इसी पर विचार करते हैं। उस समय विचार करते-करते अपनी समूची चेतना, अपना संतुलन खो बैठते हैं और नीचे पानी में गिर जाते हैं। उस समय आसपास के लोग उन्हें गिरते हुए देखते हैं और जल्दी से उन्हें पानी से बाहर निकाला जाता है। शर्मा सर को अस्पताल ले जाते हैं तब कुंती बहुत ही क्षीण होकर पति के पास बैठी है। शर्मा सर होश में आ जाते तब अपने बेटों को पुकारते हैं। अस्पताल में शशांक, मनोज आदि छात्र भी शर्मा के पास बैठे हैं। अस्पताल के बाहर विद्यार्थी प्रिंसिपल राजदान इस्तीफे की मॉग करते हैं। प्रिंसिपल राजदान बहुत परेशान है। वे छात्रों को बताते हैं कि शर्मा सर की हालत ठिक है। परंतु छात्र प्रिंसिपल की बात मानने के लिए तैयार नहीं हैं। इधर प्रो शर्मा अतीत की घटनाएँ देखते हैं कि पिता की इच्छा और संस्कार से उन्होंने अपना जीवन जी लिया है। अपने पिता के मित्र की बेटी कुंती से सिर्फ ग्यारह साडियों और हल्दी-अक्षत से ब्याह लाए थे। पत्नी, विनय और बिल्लू के साथ वे वनगमन कर रहे हैं। उनकी कवित्वपूर्ण स्मृतियाँ सिर्फ स्मृति में ही शेष रह जाती हैं और शर्मा सर की मृत्यु होती है। शर्मा सर की मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार करते समय अध्यापक, छात्र आते हैं। परंतु कुंती उन सभी को पास आने नहीं देती है। क्योंकि उनकी वजह से ही शर्मा सर की मृत्यु हुई थी। अंत में कुंती रिक्शों में अपना सामान रखकर बच्चों को लेकर गॉव जाती है तब शर्मा सर के एक छात्र विजयेंद्र के पिता आ जाते हैं। विजयेंद्र के पिता गुरूदक्षिणा के रूप में विनय और बिल्लू की शिक्षा-दीक्षा का भार लेते हैं। यहीं कथावस्तु समाप्त होती है।

कथावस्तु की समीक्षा -

साठोत्तर महिला लेखिका सूर्यबाला एक सफल उपन्यासकार है। 'दीक्षांत' उनका-सफल

उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु सरल है। अधिकारिक कथा के विकास में प्रासंगिक कथाएँ सहयोग देती हुई दिखाई देती हैं। 'दीक्षांत' में प्रो शर्मा की कथा अधिकारिक कथा है। कुंती, राजदान, डिसूजा की कथा प्रासगिक है। जो की अधिकारिक कथा में सहायक हुई है। उपन्यासकार की सफलता इस बात में निहीत होती है कि वह सभी प्रासंगिक कथाओं का अधिकारिक कथा से अविछिन्न संबंध स्थापित कर दे। 'दीक्षांत' की कथावस्तु सफल बन गई है।

इसमें डिसूजा की कथा प्रो शर्मा की महत्त्वपूर्ण कथा को एक नया एवं व्यावहारिक मोड देकर बीच में ही लुप्त हो जाती है। और अधिकारिक कथा को उद्देश्य की ओर अग्रसर करती है। कुंती और राजदान की कथा भी मुख्य कथा को विकसित करती है। प्रो शर्मा के जीवन में घटित घटनाओं और उनके वैचारिक धरातल पर उपन्यास की कथावस्तु का सफल गठन एवं विकास हुआ है। कथा में घटित प्रसंग या घटनाएँ पाठकों की जिज्ञासा तथा कौतूहल को बढाती है। परिणाम स्वरूप उपन्यास में रोचकता आई है, जो कि कथावस्तु का मूल गुण होता है। संभाव्यता और मौलिकता आदि गुण तो इसी गुण के उत्कर्ष हेतु होते हैं। अत· उपर्युक्त सभी गुणों एवं विशेषताओं के माध्यम से ही सूर्यबाला ने कथावस्तु बडे ही सुंदर कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की है।

उपन्यास का कथाक्षेत्र कॉलेज और घर का है। लेखिका ने कथावस्तु का संगठन प्रमुख पात्र शर्मा और सहायक पात्र कुंती, डिसूजा, राजदान के आधार पर किया है। समूची वस्तु प्रो शर्मा के आसपास घुमती हुई अंतिम परिणति की ओर अग्रसर होती है। अन्य पात्रों के अंतर्बाह्य रूपों का स्वत ही उद्घाटन करती चली है।

मध्यवर्गीय जीवन और शिक्षा समस्याओं को उपन्यास उद्घाटित करता है। यही यथार्थ पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। कथावस्तु मौलिक है। इसकी सहजता और सरलता पाठक की रोचकता को बढाती चली है।

'दीक्षांत' उपन्यास में लेखिका को कथोपकथन में सफलता मिल चुकी है। स्वाभाविक, उपयुक्त, पात्रानुकूल, मनोवैज्ञानिक, संक्षिप्त, कथोपकथन के जडिए कथावस्तु को गतिशील बनाया है। कथोपकथन सजीव, रोचक एवं पात्रानुकूल है।

'दीक्षांत' उपन्यास की कथावस्तु वर्तमान युग की है। कॉलेज, घर के वातावरण मे कथावस्तु आगे बढती है। कथावस्तु के जरिए लेखिका अपने उद्देश्य में सफल बन गई है। अध्यापक जीवन की दयनीयता बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की है। इसमें शिक्षा क्षेत्र का भ्रष्टाचार चित्रित किया है।

'दीक्षांत' उपन्यास का शीर्षक सार्थक लगता है। विद्याभूषण ने जो दीक्षा ली है उस दीक्षा का अंत हो जाता है। आज के वर्तमान युग में शिक्षा क्षेत्र में गंदी नीति के कारण दीक्षा का अंत होता है।

अग्निपंखी -

साठोत्तर महिला लेखिका सूर्यबाला का 'अग्निपंखी' उपन्यास विधवा नारी के जीवन का सजीव चित्र है। इसमें लेखिका ने निस्वार्थी, अज्ञानी, बेटा ही बुढापे का आधार माननेवाली और परिवार के प्रति समर्पित एक भारतीय ग्रामीण नारी के जीवन को चित्रित किया है। साथ ही लेखिका ने वृद्धत्व जैसी समस्या पर भी गहराई से प्रकाश डाला है।

'अग्निपंखी' उपन्यास की कथावस्तु की शुरूआत लुकमानगंज गाँव से होती है। जयशंकर माँ का इकलौता बेटा है। अपने पति की मृत्यु के पश्चात् वह जयशंकर को ही अपना सब कुछ मानकर चलती है। जयशंकर के पिता की जयशंकर को पढाकर बडा अफसर बनाने की इच्छा थी। उनकी इस साध और अपनी स्वयं की इच्छा के कारण माँ जयशंकर को पढाना चाहती है। वह जयशंकर की तरफ देखकर, उसे अपने जीवन का सबकुछ मानकर अपनी पहाड जैसी जिंदगी काटने का संकल्प करती है। वह अपने बच्चे को अगाध प्यार करती है। मॉ हमेशा उसे 'जयशंकर लाल', 'बचवा' नामों से पुकारती है। बडे भाई या जेठानी ने जयशंकर को कुछ कहा तो मॉ को सहन नहीं होता। एक दिन गुस्से में बडे भाई जयशंकर को 'संकरवा' कहते, तब मॉ का भावुक मन घायल हो जाता है। मॉ जेठानी से बडे-भाई को ऐसा न कहे बताने के लिए कहती है।

जयशंकर नौकरी की जगह शहर में रहता है। वह जब गाँव आता है। तब गाँव के लोग उसे कुतूहल से देखते हैं। क्योंकि उसका रहन-सहन ठिक-ठाक था। यह सब देखकर घर, गाँव के लोग उसे देखते ही रहते हैं। माँ की इच्छा यह है कि बेटे-बहू के साथ शहर में रहे। मॉ जयशंकर के पास बार-बार हठ करती है कि वह शहर में उसके साथ रहेगी। माँ का बार-बार हठ सुनकर जयशंकर विवशता से माँ को अपने साथ शहर ले आता है। लेकिन प्रकृति के प्रांगण में, खुली हवा में जीनेवाली मॉ वहॉ आते ही घुटन महसूस करती है। शहर में

शौचालय तक की लाईन देखकर उसे अचरज और क्षोभ होता है। छोटी-सी कोठरी में परदा डालकर माँ की खटिया डाल दी जाती है। तब उसे वह कोठरी एक कबूतरगाह जैसी लगती है। उस कोठरी में हाथ-पैर सीधे करने तक की जगह नहीं है। हाथ-पाँव रहते भी लूले-लंगडे की तरह इसी कोठरी में रहना पडता है। उसे इस छोटी-सी कोठरी में रहते बेहयाई और बेशरमी महसूस होती है। छोटी कोठरी के सभी धंधे सोचते हुए भी उसे पाप महसूस होता है। वह रात-बेरात नींद खुलने पर करवट भी बदल नहीं पाती है। माँ मुँह में ऑचल ठूसांकर खॉसी दबाती है। वह वैसी ही अकडकर सोती रहती है। इस कारण जयशंकर के साथ गॉव में रहने के लिए झगडा होता है। जयशंकर माँ को शहर की रहन-सहन बताता है। परंतु माँ गॉव में रहना पसंद करती है। उसे शहरी जीवन में घुटन महसूस होती है।

माँ मूलत गॉव की प्रकृति की अभ्यस्त है। खुले प्रांगण में जीने की आदि है। उसे अपने गाँव और गॉव के लोगों के प्रति असीम प्यार है। इसी कारण तंग और सीलन भरी कोठरी में रहते हुए वह महसूस करती है कि गॉव का घर भी कोई महल नहीं है। कच्चा-पक्का ही घर लेकिन सभी-सुविधाएँ वहॉ प्राप्त हैं। घर छोटा है परंतु चारों तरफ फैले खेत-खलिहान, मेड-मैदान अपने ही होते हैं। जिधर चाहे घुमे कितना बडा सकुन मिलता है। आते-जाते लोग हॅसते-बोलते हैं। माँ को जयशंकर का बचपन याद आता है। 12-14 वीं कक्षा तक की पढाई जयशंकर बड़ी लगन से पूरी करता है। पढाई पूरी होने के पश्चात् उसे नौकरी के लिए इधर-उधर घूमना पडता है। लेकिन नौकरी कहीं भी नहीं मिलती है। गॉव के लोग नौकरी को लेकर उसका मजाक उडाते हैं। जयशंकर गॉव में एक मजाक का विषय बन जाता है। उसे नौकरी न मिलने के कारण लोग यहाँ तक संदेह करते हैं कि उसने इम्तिहान ही पास न किया होगा। इसका परिणाम यह होता है कि जयशंकर घर, गॉव, रिश्तेदार आदि से कटा-कटा रहता है। जयशंकर यदि चाहता तो अपने इन खाली दिनों में खेती में जी लगा सकता था। परंतु उसे खेती में रूचि नहीं है। उसने कभी भी खेती का काम भी नहीं किया था। जयशंकर दिनभर कोठरी में पडा रहता है और शाम के समय घर छोडकर शहर चला जाता है।

माँ शहर में जयशंकर के पास रहती है। गॉव में रहने के कारण उसकी रहन-सहन और वेशभूषा पर भी वहॉ का प्रभाव रहता है। जब जयशंकर उसे शहर में घुमने के लिए ले जाना चाहता है तब माँ हमेशा की तरह अपनी धोती का पल्लू आगे खींचती है। अपनी बहू से धोती के बारे में पूछती है। बहू और सास में इसी

कारण झगड़ा होता है। बहू सास के साथ रहना पसंद नहीं करती है। वह सास से घृणा करती है। मॉ शहर में रहनेवाले गॉव के लोगों के प्रति आत्मीयता रखती है। त्रिलोकी ठाकुर घर आते हैं तब माँ को अपार संतोष होता हे। उसके साथ बहू का नफरत भरा व्यवहार देखकर माँ का भावुक मन घायल होता है। अपने बेटे से त्रिलोकी ठाकुर के बारे में बताती है। परंतु बेटा भी गाँव के किसी भी व्यक्ति से संबंध नहीं रखता है। उस पर माँ की बातों का असर नहीं होता। वह तो सपाट, सरल और शांत भाव से घूट-घूट कडुवाती चाय गले के नीचे उतारता है। फिर से मॉ जलालपुखाले शिवप्रसाद और प्यारे की बात करती है। वह चाहती है कि परदेश में अपने रिश्ते-नाते के लोगों के साथ मिल-जुलकर रहना अच्छा है। उस पर जयशंकर झुँझलाते हुए कहता है, ''नहीं मुझे किसी से व्योहार नहीं बनाना है, और तुम्हें भी ज्यो व्योहार बनाना हो, गॉव जाकर बनाना।''[4] गॉव के लोगों से रिश्ता रखने के कारण मॉ और जयशंकर के बीच झगड़ा होता है।

दूसरे दिन श्यामकिशोर के ब्याह का संदेश मिलता है तब मॉ शहर से ऊबकर गाँव जाने की बात जयशकर से कहती है। वह शहर में सिर्फ शरीर से रहती है उसका मन गॉव के लोग, खेती-सिवान आदि के बारे में सोचता है। माँ अकेली गॉव आने के लिए निकलती है तब जयशंकर अपनी शहर की अभाव भरी बात छुपाने के लिए मॉ से कहता है। अपना अभाव भरा जीवन दूसरों को पता न चले यही जयशंकर की इच्छा है। जब मॉ गॉव आती है तब देखती है कि परिवार के लोगों ने अपने लिए नई कोठरियॉ बनाई हैं। रंगाई-पुताई हुई हैं। उसके घर के सामने कूडा है। वह सोचती है कि मैंने कभी श्यामकिशोर और जयशंकर में फर्क नहीं किया। यहॉ आने पर इन लोगों का अपने-पराए का व्यवहार देखकर आहत होती है। जयशंकर यहॉ आकर कहॉ रहेगा ? उसका भी घर है इस तरह मॉ कहती तब छोटको और मॉ में झगडा होता है। बडको और छोटको एक दूसरे से हॅसते हुए शादी की बाते करती हैं। मॉ के साथ उनका व्यवहार पराया हो जाता है। मॉ उस समय सोचती है कि शहर वापस आते समय जयशंकर के पास रूपए न होते हुए भी घर के लोगों को कपडे, साडियॉ लाई है। और यहाँ आकर देखती है तो परायापन महसूस करती है। फिर भी मॉ शादी के समय सारा काम सँभालती है। विधवा होने के कारण छोटको, बडको की तरह सजती-सॅवरती नहीं। सिर्फ चूल्हा-चौका सॅभालती है। पति की मृत्यु के पश्चात् मॉ ने सजना-सॅवारना छोडा है। अपने बेटे जयशंकर को सजाकर अपनी इच्छा पूरी करती है। जयशंकर को खेती का काम करने को नहीं कहती है। जब परिवार के अन्य लोग जयशंकर को कुछ काम करने को कहते तो मॉ स्वयं

काम करती है। वह हर समय उसकी पढाई की चिंता करती है। पढाई से उसे थकान महसूस हुई होगी यह सोचकर उसके सिर में ठंडा तेल लगाकर मलती है। मास्टरजी से भी जयशंकर की पढाई के बारे में कहती है। उसे पढाकर अफसर बनाना चाहती है। इसलिए श्यामकिशोर की शादी के समय जी लगाकर मेहनत करती है। चूल्हा-चौका उसकी स्थाई दिनचर्या बन जाती है। थकान के कारण वह चूर-चूर हो जाती है। इतना सब करने पर भी किसी के मुँह से कोई अच्छा शब्द तक सुनने को नहीं मिलता है। बल्कि छोटको के कडुवाहट भरे शब्द ही सुनने मिलते हैं। एक दिन छोटको और मॉ में जयशंकर की नौकरी के कारण झगड़ा होता है। यह झगड़ा बढ जाता है। भाई जी छोटको का पक्ष लेकर उसे भली-बुरी सुनाते हैं। इससे मॉ मानसिक संतुलन खो बैठती है। जयशंकर को शहर में चिठ्ठी भेजकर बुलाया जाता है। जयशंकर गॉव आकर माँ को शहर ले जाता है। वहाँ माँ का इलाज शुरू करता है। परंतु मॉ पर बात-बात पर चिढ़ता है। अस्पताल में मॉ को मिलने के लिए दुबारा त्रिलोकी ठाकुर आते हैं तब जयशंकर ठाकुर को आने के लिए मना करता है। माँ ठाकुर के बारे में पूछती है तब उसे कुछ नहीं कहता।

एक दिन माँ के पैर से चाय की गिलास गिरकर पूरी चाय बिखरती है तब जयशंकर मॉ को झिझोडता है। मॉ उस दिन रोती है। परंतु इसका असर जयशंकर पर कुछ नहीं होता। जयशंकर मॉ को अपनढ, गॅवार समझकर बार-बार झगड़ा करता है। जयशंकर मॉ को वापस गाँव लेकर आता है तब घर के लोग मॉ को बीमारी के कारण घर में रखने में असमर्थता प्रकट करते हैं। तब जयशंकर मॉ की बीमारी के पैसे भेज देने की बात करते वापस अकेला शहर लौटता है। शहर में वह फैक्टरी में दिन-रात मेहनत करता है। अब वह अपनी पत्नी और बच्ची के साथ रहना चाहता है। तभी मॉ की हालत बहुत खराब होने की उसे सूचना मिलती है। गॉव आकर माँ की हालत और पैसे न भेजने के कारण जयशंकर का बडे ताऊ से झगडा होता है। इसी कारण मॉ को लेकर जयशंकर शहर लौटता है। डाक्टर की दवा की अपेक्षा वैद्य की दवा का मॉ पर असर होता है। मॉ अब धीरे-धीरे ठीक होने लगी है। यह देखकर दवा के पैसों से छोटी बच्ची के लिए मिल्कपाउडर लाता है। ऐसे ही दिन बीतने लगते हैं। एक दिन मॉ फटी लुगरी पहनकर दरवाजे पर बैठ जाती है। जयशंकर काम से लौटते समय माँ की अवस्था देखकर उसे गुस्सा आता है। इसी गुस्से में अपनी पत्नी को मारने के लिए हाथ उपर उठाना है। परंतु पत्नी उसे कहती है कि जो घर में था वह पहनकर माँ बैठी है। तुम मुझे और बच्ची को पाल-पोस नहीं सकते तो

मैं मेरे मॉ-बाप के पास जाऊँगी। जयशंकर मॉ को दरवाजे से अंदर खींचकर चिल्लाता है "सारी कोठरी भट्टे की तरह खोलकर नुमाइश लगा रही हो.. शकल देखी है अपनी ? यह फटी लुगरी धोती, बाहर बैठने लायक है ? यही हालत रही, तो कुऍ में कूदकर जान दे दूँगा किसी दिन।"[5] जयशंकर मॉ पर क्रोध प्रकट करता है। जब मॉ फिर से गॉव जाने की बात करती है तब जयशंकर को बहुत-गुस्सा आता है। जयशंकर अपने जीवन की इस अव्यवस्था को मॉ, घर और गॉव को ही जिम्मेदार मानता है। यह सुनकर मॉ रोने लगती है। तब उसे चूप करने की अपेक्षा ताव खाकर मॉ पर झपटता है। बहू दौडकर उसे घुडाती है। थोडी देर बाद माँ शांत हो जाती है। बहू उसे खाने के बारे में कहती, नहलाने के लिए कहती परंतु मॉ कुछ भी सुनती नहीं। बहुत दिन न नहाने से कोठरी में अजीब गध आती है। तब जयशंकर गुस्से से मॉ को नहलाने के लिए नल के पास ले जाता है। मॉ बहुत देर तक अंदर नल के नीचे बैठी देखकर फिर उसे घसीटता है। रात के समय सभी सो जाने के बाद मॉ फिर से नल के नीचे बैठ जाती है। बहुत देर पानी में रहकर माँ बेहोश होती है। जयशंकर घबराकर डॉक्टर को बुलाता है। तब डाक्ट भी कहते हैं कि ऐसे मरीज जल्दी मर नहीं जाते हैं। मॉ का मानसिक संतुलन बिगडता है। मॉ की अवस्था पागल जैसी हो जाती है। यहीं कथावस्तु समाप्त होती है।

कथावस्तु की समीक्षा -

आधुनिक हिंदी महिला लेखिका सूर्यबाला एक सफल उपन्यासकार है। महानगर में रहने के बावजूद भी ग्रामीण जीवन पर उपन्यास लिखने में सफल हुई है। 'अग्निपंखी' उपन्यास गॉव और शहर दोनों पर आधारित है। इस उपन्यास की कथा सरल है। अधिकारिक कथा के साथ प्रासंगिक कथा ने सहयोग दिया है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में 'मॉ' और 'जयशंकर' की कथा अधिकारिक कथा है, तो बहू, छोटको, बडको, ताऊ, त्रिलोकी ठाकुर आदि की कथा प्रासंगिक है, जो कि अधिकारिक कथा में सहायक हुई है। उपन्यासकार की सफलता इस बात में निहित होती है कि वह सभी प्रासंगिक कथाओं का अधिकाधिक कथा से अविछिन्न संबंध स्थापित कर दे। 'अग्निपंखी' उपन्यास की कथावस्तु सफल बन गई है।

इस उपन्यास में बहू की कथा माँ और जयशंकर की कथा को एक नया मोड देकर चली जाती है। और अधिकारिक कथा को उद्देश्य की ओर अग्रसर करती है। छोटको, बडको, त्रिलोकी ठाकुर की कथा भी

मुख्य कथा को विकसित करती है। मॉ के जीवन में घटित घटनाओं और उनके वैचारिक धरातल पर उपन्यास की कथावस्तु का सफल गठन एवं विकास हुआ है। कथा में घटित प्रसंग या घटनाएँ पाठकों की जिज्ञासा तथा कौतूहल को बढाती है। परिणामस्वरूप उपन्यास में रोचकता आई है, जो कि कथावस्तु का मूल गुण होता है। संभाव्यता और मौलिकता आदि गुण तो इसी गुण के उत्कर्ष हेतु होते हैं। अत. उपर्युक्त सभी गुणों एवं विशेषताओं के माध्यम से ही सूर्यबाला ने कथावस्तु बडे ही सुंदर कलात्मक ढंग से प्रस्तुत की है।

लेखिका ने 'माँ' और 'जयशंकर' आदि प्रमुख पात्रों के साथ सहायक पात्र बहू का आधार लिया है। समूची कथावस्तु मॉ के इर्द-गिर्द घुमती हुई अंतिम परिणति की ओर अग्रसर होती है। अन्य पात्रों के अंतर्बाह्य रूपों का स्वत ही उद्घाटन करती चली है।

मध्यवर्गीय जीवन और नारी जीवन की समस्याओं को उपन्यास उद्घाटित करता है। यही यथार्थ पाठाकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। कथावस्तु मौलिक है। इसकी सहजता और सरलता पाठक की रोचकता को बढाती चली है।

'अग्निपंखी' उपन्यास का कथानक - लुकमानगंज, गाँव और शहर - इन दो जगहों पर घटित होता है। 'अग्निपंखी' उपन्यास की कथावस्तु वर्तमान युग की है। इसमें गॉव का वातावरण और शहरी वातावरण का चित्रण हुआ है।

इस उपन्यास में लेखिका ने विधवा नारी की समस्या को उजागर किया है। विधवाओं का जीवन आज के युग में किस तरह हो गया है इसका चित्रण करके उद्देश्य में सफलता पाई है।

'अग्निपंखी' उपन्यास का शीर्षक सार्थक है। जयशंकर, मॉ और परिवार में झगडा हो जाता है। छोटी-सी बात को बढावा दिया जाने के कारण संघर्ष बढता है। इस आधार पर 'अग्निपंखी' शीर्षक सार्थक लगता है।

निष्कर्ष -

निष्कर्षत: हम कहते हैं कि सूर्यबाला आधुनिक युग की श्रेष्ठ उपन्यासकार है। उपन्यास साहित्य में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। उपन्यास साहित्य से सामाजिक जीवन को चित्रित करके समस्याओं

को उजागर किया है। 'दीक्षांत' उपन्यास शिक्षा क्षेत्र पर आधारित है। 'अग्निपंखी' उपन्यास नारी जीवन पर आधारित है।

सूर्यबाला ने दोनों उपन्यासों की कथावस्तु का संगठन बहुत ही कलात्मक ढंग से किया है। कथावस्तु रोचक, सरल होने के कारण पाठकों को अपने ओर आकर्षित करती है। सूर्यबाला कथावस्तु में सफल हुई है।

सूर्यबाला ने पात्रों का चुनाव भी मध्यवर्गीय समान से किया है। पात्र आज के वर्ग के होने के कारण पाठकों को अपने लगते हैं। पात्रों के माध्यम से लेखिका पाठकों तक पहुँच गई है। पात्रों के संवाद भी बहुत ही प्रभावशाली बने हैं। संक्षिप्त, सरल कथोपकथनों से उपन्यासों का विकास हुआ है।

सूर्यबाला की भाषाशैली सरल, सीधी है। परिवेश के अनुसार भाषा का प्रयोग करते हुए उपन्यासों को आकर्षित बनाया है। भाषा का प्रयोग कलात्मक करने से उपन्यास सजीव बने हैं।

इस प्रकार सूर्यबाला महिला उपन्यासकारों में अपना एक अलग स्थान रखती हैं।

संदर्भ सूची

1 प्रतापनारायण टंडन, हिंदी उपन्यास कला, पृ 140

2 भगीरथ मिश्र, काव्य शास्त्र, पृ 77

3 सूर्यबाला, दीक्षांत, पृ. 51

4 वही, अग्निपंखी, पृ. 30

5 वही, पृ 58